मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

जनवरी 2012 वर्ष 17, अंक 1

राष्ट्रगान 'जन गण मन' के सौ वर्ष

27 दिसंबर, 2011 को राष्ट्रगान 'जन गण मन' के एक सौ वर्ष पूरे हो गए। पहली बार इस गीत को कोलकाता में कांग्रेस अधिवेशन में गाया गया था। 28 दिसंबर, 1919 को मदनपल्ली में बेसेंट थियोसॉफिकल कॉलेज की सभा में जेम्स कजिंस के अनुरोध पर रवींद्रनाथ ने खुद इस गीत को बांग्ला में गाया। आजादी के बाद भारत की संविधान सभा ने 24 जनवरी, 1950 को इसे राष्ट्रगान के तौर पर मान्यता दी। संविधान सभा में 'वंदेमातरम' और 'सारे जहां से अच्छा' पर भी राष्ट्रगान बनाने हेतु विमर्श हुआ था, पर अंतिम सहमति 'जन गण मन' पर ही बनी। विदित हो कि इस गीत को गुरुदेव ने पहले-पहल ब्रह्म समाज की पत्रिका 'तत्वबोध प्रकाशिका' के लिए लिखा था। वर्ष 1911 में ही रवींद्रनाथ ने 'जन गण मन' का बांग्ला से अंग्रेजी में अनुवाद किया था। कई साल बाद उन्होंने इस गाने की धुन आयरिश कवि जेम्स कजिंस की पत्नी मार्गरिट के साथ मिलकर बनाई, जो आज भी प्रचलित है। बहुतों को यह नहीं मालूम कि 'जन गण मन' में कुल मिलाकर पांच दोहे हैं, जबकि भारत के राष्ट्रगान के तौर पर इसके पहले दोहे को ही लिया गया है। इस गाने में भारत के विभिन्न राज्यों के नाम का समावेश है, इस तरह यह गीत हमारे राष्ट्र की एकता को भी दर्शाता है।

शेष अगले पृष्ठ में...

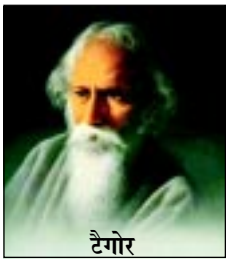

टैगोर

पुण्य तिथि 30 जनवरी

हे राम!

"महात्मा गांधी के जाने के सौ साल बाद शायद ही कोई विश्वास करे कि हाड़-मांस का कोई ऐसा शख्स धरती पर पैदा भी हुआ था।"

–प्रख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन का महात्मा गांधी के बारे में कहा गया ऐतिहासिक कथन

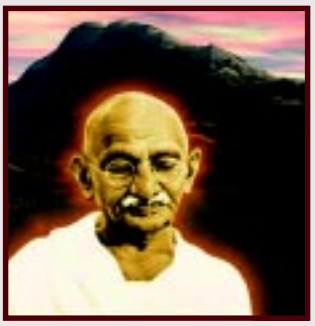

बापू

मनुष्य

मनुष्य में तेज तब पैदा होता है
जब वह कष्ट उठाता है
फिर चाहे वह कैसा भी हो
जैसे, बूट पर पॉलिश करने मात्र से
उस पर चमक नहीं होती
उसे घिसना/रगड़ना होता है
उसी प्रकार, मनुष्य जब संघर्ष करता है,
अपने को तपाता है, तब उसमें तेज पैदा होता है–
आत्मीय तेज।

साभार प्रस्तुति : **गजानन पाण्डेय,** काचीगुडा, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

(यह अंश मराठी से अनूदित है तथा 'संस्कार परिवार' के अक्तूबर, 2010 अंक में छपा था। प्रकाशक थे, सर्वोदय आश्रम, नागपुर)

मुबारक नव मंगलमय वर्ष !

हर्ष आपके आंगन नाचे
द्वार नाचे उत्कर्ष
शुभ घड़ियां सुख-चैन दिखाए
यह आगंतुक वर्ष !

लक्ष्मी विमल, डालटनगंज, पलामू, झारखंड

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि पहले-पहल गांधी जी ने इस गाने का विरोध किया था, किंतु बाद में उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। सुभाष चंद्र बोस ने तो काफी पहले ही इसे भारत के राष्ट्रगान के रूप में मान्यता दे दी थी। उनका मानना था कि रवींद्रनाथ के राष्ट्रगान में भारत का भूगोल समाहित है। देश के दक्षिण और पूर्व के राज्यों समेत अनेक राज्यों का इस गाने में जिक्र नहीं होने से कुछ लोगों ने इसे राष्ट्रगान के रूप में मान्यता नहीं देने की बात उठाई, किंतु सर्वोच्च न्यायालय ने इस आपत्ति को खारिज कर दिया था। न्यायालय का मानना था कि राष्ट्रगान देश की सीमाओं को नहीं बल्कि देशभक्ति की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।

दरअसल, टैगोर दुनिया के ऐसे इकलौते कवि हैं जिन्हें दो-दो देशों के राष्ट्रगान के रचयिता होने का गौरव प्राप्त है। बांग्लादेश के राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' भी उन्हीं की रचना है।

जन्मदिवस 4 जनवरी के अवसर पर

नेत्रहीनों की 'आंख' थे लुई ब्रेल

आज ब्रेल लिपि की पुस्तकें दुनिया की तकरीबन हर महत्वपूर्ण भाषा में है। ब्रेल लिपि नेत्रहीनों के लिए विकसित की गई लिपि है जिसमें अक्षरों को टटोलकर पढ़ा जाता है। कागज पर विशिष्ट रूप से उभरे अक्षरों को ही ब्रेल लिपि कहा जाता है। लेकिन हममें से बहुतों को यह नहीं पता कि नेत्रहीनों के लिए पढ़ाई-लिखाई को सुलभ करने की इस विधि का विकास कब, कैसे और किसके द्वारा हुआ। दरअसल, आज जिसे हम ब्रेल लिपि कहते हैं वह फ्रांस के एक दृष्टिहीन व्यक्ति लुई ब्रेल, जो जन्म से 3-4 वर्ष तक दृष्टिसक्षम था और और जिसकी एक दुर्घटना में दोनों आंखें धीरे-धीरे खराब हो गई थीं, द्वारा विकसित की गई विधि है।

लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी, 1809 को फ्रांस के पेरिस कूपवरे नामक गांव में हुआ था। ब्रेल के पिता साइमन रैने एक चर्मकार थे। लुई के माता-पिता ने बेटे की शिक्षा-दीक्षा में कमी नहीं की और नेत्रहीन बालक युवावस्था में प्रवेश कर गया। दस वर्षों तक कूपवरे में शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनका पेरिस स्थित विश्व के पहले अंधविद्यालय, नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर ब्लाइंड में दाखिला कराया गया। स्कूल के संस्थापक वेलंटीन हाई द्वारा ईजाद की गई विधि से यहां नेत्रहीनों को पढ़ाया जाता था। वेलंटीन अंधे नहीं थे लेकिन एक संवेदनशील और समर्पित लोकसेवक थे। उन्हें नेत्रहीनों के प्रति बेहद लगाव था। उनके स्कूल में नेत्रहीनों को पुस्तकों में लैटिन अक्षरों को मोटे कागज पर उभारकर (एमबॉस) पढ़ाने की विधि से पढ़ाई कराई जाती थी। नेत्रहीन बच्चे उंगली से टटोलकर अक्षरों को पढ़ते और अर्थ समझते थे। लेकिन इस पारंपरिक विधि में धीरे-धीरे ही पढ़ाई की जा सकती थी और इसमें भी स्वयं हाई का सहयोग अपेक्षित होता था।

ब्रेल ने हाई की पुस्तकों को पढ़ने के क्रम में अनेक कमियों को देखा। सबसे बड़ी कमी यह थी कि इन पुस्तकों का स्वरूप कुछ ऐसा था कि इसमें अधिक सामग्री लिखना संभव नहीं था, फलतः पुस्तकों में जानकारी बहुत थोड़ी होती थी। पुस्तकों पर उभारे गए अक्षर अधिक स्थान भी घेरते थे क्योंकि ये जटिल और कलात्मक शैली में बने होते थे। बच्चे उन अक्षरों को लिख पाने में सक्षम नहीं थे। पुस्तकें अलग-अलग आकार की होती थीं और काफी वजनी भी। लुई ब्रेल ने जिन-जिन कमियों को देखा उस पर उन्होंने काफी मेहनत की और अंत में उन्होंने जो पुस्तक विकसित की वह पहले की तुलना में अधिक आसान, कम जगह घेरने वाली और कम वजन की थी। इनको पढ़कर लिखना भी संभव था। स्वाभाविक तौर पर ब्रेल द्वारा विकसित विधि को ब्रेल लिपि का नाम दिया गया। आज ब्रेल लिपि में अनेक विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं और नेत्रहीन बड़े आराम से पुस्तकें पढ़ लेते हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा भी ब्रेल लिपि में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है।

लुई ब्रेल का निधन महज 43 साल की आयु में, 6 जनवरी, 1852 को हो गया।

संदर्भ : स्वामी विवेकानंद जयंती, 12 जनवरी

प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी, स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन को देश में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हम सबके खट्टे-मीठे बोल बदल के रख देंगे
हम इस दुनिया का भूगोल बदल के रख देंगे

जनवरी माह में लोहड़ी के अवसर पर देश भर में पतंग उड़ाने की परंपरा है

नव वर्ष कुछ ऐसे भी : खरगौन (म.प्र.) में आम नागरिकों ने जिले भर की बेटियों के साथ मिलकर नव वर्ष का अनूठे ढंग से स्वागत किया। हजारों छात्राओं ने 'बेटी बचाओ' के संदेश के साथ एक साइकिल मार्च निकाला, जिसमें शहर के जनप्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया।

संदर्भ : विश्व हिंदी दिवस, 10 जनवरी

संस्मरण : **महादेवी वर्मा**

मैं और मेरा परिवेश

मैं आज भी मानती हूं कि किसी भी देश का स्वतंत्र होना बहुत आवश्यक है। दूसरा तत्व मुझे मिला बापू से भाषा के संबंध में। बड़ी टूटी-फूटी हिंदी में बोलते थे। मैंने उनसे पूछा, 'बापू, आप सब जगह हिंदी बोलते हैं जबकि आप अच्छी अंग्रेजी बोल सकते हैं। क्या कारण है कि आप हिंदी बोले?' उन्होंने कहा, 'इसलिए कि यही भाषा राष्ट्र की आत्मा को सहज ढंग से व्यक्त कर सकती है, अंग्रेजी तो कर ही नहीं सकती। इसलिए मैं हिंदी ही बोलूंगा।'

उनके सामने मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने देश में हिंदी ही बोलूंगी। *देहरि भई विदेश* पुस्तक से साभार

क्या आप जानते है?

- हिंदी में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, स्पेनिश, तुर्की और पश्तो शब्दों का भी समावेश है।
- मॉरीशस, सूरीनाम एवं फिजी में हिंदी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। कई देशों में यह संपर्क भाषा के रूप में है।
- हिंदी के अलावा सिंहल (श्रीलंका), नेपाली, तिब्बती, बर्मी तथा थाईलैंड की वर्णमाला भी देवनागरी लिपि में ही है।
- महारानी विक्टोरिया ने भारत आने से पूर्व हिंदी सीखने हेतु भारत से एक हिंदी शिक्षक को बुलवाया था।

सुभाष चंद्र बोस जयंती
23 जनवरी पर विशेष

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा

नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कहां और कैसे 'तुम मुझे खून दो...' जैसे ऐतिहासिक कथन वाले उद्‌बोधन किए थे तथा 'जय हिंद' का नारा दिया था इसका खुलासा यहां किया गया है। ***–संपा.***

सुभाष बाबू जापान पहुंचकर जापान के प्रधानमंत्री जनरल तोजो से मिले। दोनों नेताओं के बीच समान स्तर पर बातचीत हुई। नेताजी ने भारत की स्वतंत्रता के लिए जनरल तोजो से बिना शर्त सहायता मांगी, जो कि स्वीकार कर ली गई। इसके बाद नेताजी रास बिहारी बोस से मिले, वे उन्हें सिंगापुर ले गए। वहां रास बिहारी बोस ने विधिवत 'आजाद हिंद संघ' के अध्यक्ष पद को नेताजी को सौंप दिया। नेताजी आजाद हिंद की अस्थायी सरकार के सभापति और प्रधान सेनापति चुने गए। उन्होंने यहां से भारतीयों के लिए ओजस्वी भाषण दिया और देशवासियों तथा प्रवासी भारतीयों से कहा, ''आजादी बलिदान चाहती है, यदि आजादी चाहते हो तो तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा!''

नेताजी की इस पुकार पर सैकड़ों-हजारों की संख्या में सैनिक तथा युवक उनके संगठन में तन-मन-धन से आ मिले। उन्हीं दिनों नेताजी ने 1857 की वीरांगना लक्ष्मीबाई (झांसी की रानी) के नाम पर महिलाओं की सेना की स्थापना की। समय आने पर इस सेना ने युद्ध के साथ-साथ घायल सैनिकों की देखभाल करके और मोर्चे पर दुश्मनों को हताहत करके आश्चर्यजनक कार्य किया। बाद में नेताजी ने एक बाल-सेना भी संगठित की। उन्हीं दिनों नेताजी ने अपने भाषण में भारतवासियों को 'जय हिंद' का नया नारा दिया। यही नारा कुछ ही दिनों में भारतीयों का प्रिय अभिवादन और विदेशी सरकार के विरोध में चल रहे आंदोलन का प्रतीक बन गया।

नया वर्ष इस तरह मनाएं

रुद्रपाल गुप्त 'सरस'

भाईचारा-प्रेम बढ़ाएं
नया वर्ष इस तरह मनाएं।
हम सब मानव-मानव एक
अपने सभी इरादे नेक
कष्ट न कोई हमसे पाए
ऐसा कुछ सोचे प्रत्येक
दिन न किसी का कभी दुखाएं
भाईचारा-प्रेम बढ़ाएं। नया वर्ष...
हंसी और मुस्कान हमारी
मधुर-मधुर हर तान हमारी
आसमान है एक हमारा
धरती एक समान हमारी
आओ कटुता मार भगाएं
भाईचारा-प्रेम बढ़ाएं। नया वर्ष...
उन्नति-पथ पर आगे बढ़ना
हमें संभलना, हमें संवरना
हिमगिरि की ऊंचाई कम है
दुष्कर नहीं जलधि का तरना
मन में ऐसा जोश जगाएं
भाईचारा-प्रेम बढ़ाएं। नया वर्ष...
छोड़ पुरानी सारी बातें
जिनसे लगी हुई आघातें
निश्चय कुछ करना है ऐसा
बीतें दुख की लंबी रातें
सद्भावों की पौध उगाएं
भाईचारा-प्रेम बढ़ाएं। नया वर्ष...

हरदोई, उ.प्र.

जाड़े की धूप

डॉ. रामशंकर चंचल

हलकी-हलकी
तपती धूप
तन को मीठी
लगती धूप

रोज सवेरे
आती धूप
जाड़े को
हर जाती धूप

सबके आंगन में
खिलती धूप
तपती और
मचलती धूप

बिना भेद के
सुख देती
मां की ममता
लगती धूप।

झाबुआ, म.प्र.

आओ चलें

आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

आओ तपें सूर्य की तरह
पर किसी को जलाकर
हम न तपें।

आओ हंसें फूलों की तरह
पर किसी को रुलाकर
हम न हंसें।

आओ जलें दीपक की तरह
पर किसी को बुझाकर
हम न जलें।

आओ फलें पेड़ों की तरह
पर किसी को मिटाकर
हम न फलें।

आओ बढ़ें आंधियों की तरह
पर किसी को गिराकर
हम न बढ़ें।

आओ चलें लहरों की तरह
पर किसी को हटाकर
हम न चलें।

सुंदरनगर, हि.प्र.

देखो फिर नव वर्ष है आया

लक्ष्मी विमल

धरती खुश है आसमान भी
पक्षी गाते मधुर गान भी
सूरज नया सवेरा लाया
देखो फिर नव वर्ष है आया।

कुछ तो हैं वनभोज को जाते
कुछ घर में ही मोद मनाते
कण-कण जन-जीवन हर्षाया
देखो फिर नव वर्ष है आया।

नई उमंगें, नई अभिलाषा
नया हौसला, नया दिलासा
आशाओं का दीप जलाया
देखो फिर नव वर्ष है आया।

शुभकामना सबको मेरी
चमके किस्मत हरदम तेरी
पड़े गमों का कभी न साया
देखो फिर नव वर्ष है आया।

हर मुश्किल में हंसते रहना
बाधाओं से कभी न डरना
सदा नहीं कोई दुख टिक पाया
देखो फिर नव वर्ष है आया।

डालटनगंज, पलामू, झारखंड

अभियान चलाओ

अज़ीज जौहरी

घर-घर यह अभियान चलाओ
बस्ती को खुशहाल बनाओ
तुम भी आओ, तुम भी आओ
नेक काम में हाथ बंटाओ।

अपने-अपने मन को बदलो
इस धुंधले दरपन को बदलो
शोर को बदलो राग-रंग में
आंसू को बदलो उमंग में
चप्पा-चप्पा अलख जगाओ
अंधियारे में दीप जलाओ।

लोग पड़े हैं भ्रम में भाई
सबके मन की करो सफाई
बहुतों को तो ज्ञान नहीं है
जीवन की पहचान नहीं है
जीने का गुर इन्हें सिखाओ
बांह पकड़कर पार लगाओ।

ऐसा जीना भी क्या जीना
घुट-घुटकर है आंसू पीना
टुकड़े-टुकड़े बंट जाओगे
सोचो आखिर क्या पाओगे
गीत-हंसी-किलकारी लाओ
घर भर ओढ़ो और बिछाओ।

इलाहाबाद, उ.प्र.

भोर

सतीश उपाध्याय

लिए ताजगी आती भोर
राह नई दिखाती भोर
बढ़ो लक्ष्य की ओर सदा
हमको ये समझाती भोर।

मेहनत से घबराना कैसा
हमको यही सिखाती भोर
समझें, सीखें और करें
ज्ञानी हमें बनाती भोर।

नित सबको ये खुशी बांटती
सब पर प्यार लुटाती भोर
मुस्कानों का लिए पिटारा
सबको ही हर्षाती भोर।

नई डगर में नई आस ले
रोज नियम से आती भोर
अंधकार में डूबे पथ को
आलोकित कर जाती भोर।

मनेंद्रगढ़, छत्तीसगढ़

जीत जाने के लिए है जिंदगी

अब्दुल मलिक ख़ान, रामनगर, झालावाड़, राजस्थान

मुस्कुराने के लिए है जिंदगी
गीत गाने के लिए है जिंदगी
सर झुकाकर जो चलें उनसे कहो
सर उठाने के लिए है जिंदगी
आसमां के चांद-तारों की तरह
झिलमिलाने के लिए है जिंदगी
हौसला कितना है कितनी जान है
आजमाने के लिए है जिंदगी
काम जो कोई न कर पाया उसे
कर दिखाने के लिए है जिंदगी
हारने की बात क्यों मन में उठे
जीत जाने के लिए है जिंदगी।

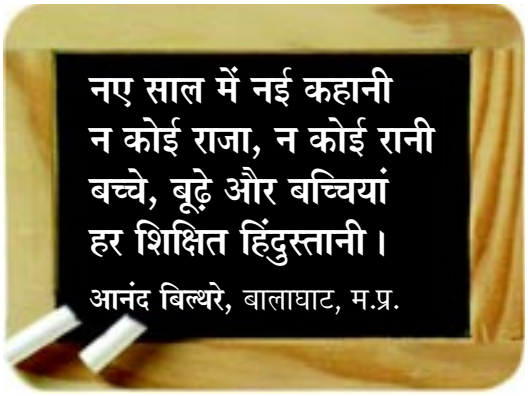

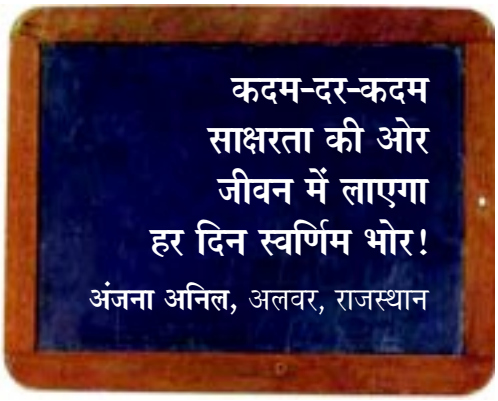

साक्षरता अभियान चलाएं
शिक्षा को घर-घर पहुंचाएं।
–स्वदेश मंडावरी, फरीदाबाद, हरियाणा

गणतंत्र दिवस
26 जनवरी की बधाई!

सुदृढ़ राष्ट्र की यही पहचान
पढ़ा-लिखा हो हर इंसान।
–रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **साक्षरता संवाद : दिसंबर 2011 :** मुखपृष्ठ पर दो महान विभूतियों–डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी–का जीवन दर्शन छापकर आपने पाठकों का ज्ञानवर्द्धन किया है। धन्यवाद! राजगोपालाचारी की पुण्यतिथि भी बताते तो अच्छा होता। **देवराज आर्यमित्र,** हरीनगर, नई दिल्ली
(सी. राजगोपालाचारी का निधन 25 दिसंबर, 1972 को हुआ था–**संपा.**)

☐ **सा. सं. : नवं. 2011 :** अंक नियमित मिल रहे हैं। नवंबर अंक में अनेक विभूतियों के प्रेरित करते वक्तव्य, प्रेरणाप्रद संस्मरण एवं अन्य संदर्भित रचनाएं अच्छी लगीं। बाल दिवस पर अनुकूल काव्य प्रस्तुति अंक को चित्ताकर्षक बना गया।
विनय अश्म, संपादक : लेकिन, जमुई, झारखंड

☐ प्रस्तुत अंक विशेष रूप से पठनीय लगा, क्योंकि इसमें राष्ट्रीय शिक्षा दिवस से संदर्भित सामयिक आलेख के साथ संदर्भित माह के महान विभूतियों के प्रेरक उद्‌बोधनों सहित शिक्षा का संदेश दिया गया है। 'पुस्तक प्रेमी नेहरू' अंक का विशेष आकर्षण रहा। **जे.सी. लाड,** इंदौर, म.प्र.

☐ शायद डाक की गड़बड़ी से जून के बाद केवल अक्तूबर 2011 का ही अंक प्राप्त हो सका। अंक देखते ही इतनी प्रसन्नता हुई कि लगा मेरी खोई हुई निधि मुझे मिल गई। आपसे अनुरोध है कि **सा. संवाद** मुझे अवश्य भेजें। इसे पढ़े बिना अधूरापन महसूस होता है। बापू एवं शास्त्री संदर्भित कविताएं बहुत अच्छी लगीं। वैसे, अन्य कविताएं भी अच्छी थीं। **लक्ष्मी विमल,** डालटनगंज, झारखंड

☐ **सा. सं.** प्रायः पढ़ने को मिलता रहता है। निस्संदेह इसके प्रत्येक अंक में पठनीयता का चुंबकीय आकर्षण बना रहता है। शिक्षा के महत्व के संदेश प्रौढ़ों, नवसाक्षरों व बच्चों समेत सभी के लिए उपयोगी व प्रेरणादायी हैं। साक्षरता की इस पथप्रदर्शिका पत्रिका का कलेवर भी मनमोहक है। बधाई व मंगलकामनाएं!
डॉ. राजेंद्र मिलन, आगरा, उ.प्र.

☐ **सा. सं.** के हर अंक में अर्थपूर्ण शब्दों की सार्थक अभिव्यक्ति प्रभावित करती है। **डॉ. अंजना अनिल,** अलवर, राजस्थान

☐ **साक्षरता संवाद** वर्षों से पढ़ता रहा हूं, किंतु पत्रिका में हाल के वर्षों में कई स्वागत योग्य बदलाव आए हैं जिसने पत्रिका को अधिक रुचिकर बना दिया है। इसमें चित्रों का संयोजन तथा सामग्री-चयन काबिलेतारीफ है। **राधाकांत भारती,** पीरागढ़ी, नई दिल्ली

☐ **सा. सं.** बरसों से पढ़ रहा हूं। सच कहूं आपकी यह पत्रिका अप्रतिम पारितोषिक है समस्त पाठकों के लिए। मंगलकामनाएं!
डॉ. वेणु गोपालकृष्ण 'इंदीवरम', कालिकट, केरल

☐ प्रत्येक अंक में रोचक और ज्ञानवर्द्धक रचनाओं का संकलन होता है। कुछ पृष्ठ और बढ़ाएं, ताकि समुचित ज्ञानोपयोगी सामग्री प्रकाशित हो सके। **अनिल द्विवेदी 'तपन',** कन्नौज, उ.प्र.

☐ साक्षरता से कर रहा / 'शरद' नित्य संवाद
पढ़कर ही होता सदा / हर इक जन आबाद
बिना पढ़े मिलता नहीं / किंचित भी सम्मान
इसीलिए हरदम पढ़ो / पा लो अक्षर-ज्ञान।
प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

☐ साक्षरता संवाद प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। अच्छे लेखकों की रचनाएं पढ़ने को मिलती हैं।
साक्षरता संवाद मिला है / जैसे सुंदर फूल खिला है
शब्द-शब्द है इसका न्यारा / करता शिक्षा का उजियारा
नवसाक्षरों को संदेश मिला है / जैसे तारों को आकाश मिला है।
डॉ. शकुंतला तंवर, अजमेर, राजस्थान

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। **–संपा.**

अक्षर सीखो

राधेलाल 'नवचक्र'

सूरज उगते ही जैसे
दूर भागता अंधेरा
अक्षर सीखते ही वैसे
अज्ञान भागता है सारा।
अक्षर सीखो, सीखो अक्षर
निरक्षरता दूर भगाओ
साक्षरों की टोली में
अपना नाम लिखवाओ।
जिसने भी सीखा अक्षर
नहीं रहा वह निरक्षर
आगे बढ़ना जो चाहे
बनना होगा उसे साक्षर।
साक्षरता अभियान से
बनता देश महान है
निरक्षरता देश-समाज का
बहुत बड़ा अपमान है।

हसनगंज, भागलपुर, बिहार

अनपढ़

अनिल द्विवेदी 'तपन'

पढ़ने में ही मन लगे, पढ़ो, बनो विद्वान
पढ़ने से ही नित बढ़े, निज गौरव, यश, मान
'क ख ग' को सीखकर, नित्य बढ़ाओ ज्ञान
डॉक्टर, वैज्ञानिक बनो, बढ़े देश का मान
दूर रहें जो कलम से, वे अनपढ़ कहलाएं
काम बिगारें आपनो, दूजे हंसी उड़ाएं।

कन्नौज, उत्तर प्रदेश

हम पढ़ें, औरों को पढ़ाएं

नास्तिक

अक्षरों को मीत बनाएं
साथ-साथ बैठें–
हम पढ़ें, औरों को पढ़ाएं।

हाथ मिला, हम संकल्प लें
आगे बढ़-बढ़कर
हमारे आस-पास न रहे
कोई भी जन निरक्षर
वाक्य रचना, व्याकरण को
सरल बना-बनाकर–
हम सीखें, औरों को सिखाएं।

पढ़ने-लिखने से बढ़ता है
ज्ञान-विज्ञान का भंडार
कोसों दूर चला जाता है
अज्ञानता का अंधकार
सुनहरा हो जाता है
शब्दों का संसार–
हम जानें, औरों को बताएं।

कठिन नहीं, सरल है
करना शिक्षा का दान
इस काम से बढ़ता है
जग में मान-सम्मान
सिर से उतरता है समाज
का सारा ऋण–
हम समझें, औरों को समझाएं।

महू, इंदौर, मध्य प्रदेश

पढ़ा-लिखा हो देश हमारा

गोपीनाथ कालभोर

ना हो घर अनपढ़ की कारा
पढ़ा-लिखा हो देश हमारा।

अनपढ़ रहने के हैं संकट
हिसाब-किताब की समस्या विकट
अशिक्षा का नहीं कोई किनारा
शिक्षा से मिलता है सहारा।

पढ़-लिखकर हम ज्ञानी होते
कठिन समय में ध्यानी होते
अशिक्षा न आए निकट दुबारा
प्रौढ़-शिक्षा का लेना सहारा।

निरक्षरता प्रगति में बाधक
बनना हमें साक्षरता साधक
फिर नहीं संकट की बहे धारा
आगे बढ़े परिवार हमारा।

अनपढ़ रह दुख पड़े भोगना
खान-पान नहीं मिले भोगना
साक्षरता है अधिकार हमारा
पूर्ण करो अभियान तुम्हारा।

घर-घर के नर-नारी पढ़ेंगे
राष्ट्र-विकास कर आगे बढ़ेंगे
बस हो दृढ़ संकल्प सभी का
देश होगा समृद्ध हमारा।

खंडवा, मध्य प्रदेश

शिक्षा की मुस्कान

साइकिल वाली दीदी

–निराला

उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है, लेकिन कड़कड़ाती ठंड, चिलचिलाती धूप और मूसलाधार बारिश में भी वे साइकिल से राजधानी पटना में घूमती हुई दिखती हैं। साइकिल से इनके अटूट रिश्ते के कारण इन्हें 'साइकिल वाली दीदी' के नाम से भी जाना जाता है। सुधा वर्गिज की जीवन यात्रा केरल के कोट्टयम जिले से शुरू हुई। नन के रूप में वे पटना आईं तो फिर यहीं की होकर रह गईं। उन्होंने बिहार के सबसे पिछड़े मुसहर तबके के लिए काम करना शुरू किया। राज्य में करीब 21 लाख की आबादी वाले इस समुदाय के पुरुषों में साक्षरता दर पांच फीसदी है और महिलाओं में तो डेढ़ फीसदी से भी कम। चार दशक से वे इस तबके को शैक्षणिक व सामाजिक रूप से सशक्त करने के अभियान में लगी हुई हैं। 'नारी कुंज' नामक संस्था के माध्यम से सुधा राज्य के 50 केंद्रों के जरिए तकरीबन डेढ़ हजार मुसहर लड़कियों के बीच शिक्षा का दीप जला रही हैं और साथ ही उन लड़कियों को भी साइकिल वाली लड़की बनाने की कोशिश में लगी हुई हैं। अदम्य साहसी और निर्भीक सुधा कहती हैं, ''गांधी जी ने सबसे अंतिम आदमी की बात कही थी, वह अंतिम आदमी मुझे मुसहर समुदाय के लोग ही लगते हैं। इनसे पिछड़ा शायद ही देश में कोई अन्य समुदाय हो।'' सुधा पूरी तरह से इस समुदाय के साथ रच-बस चुकी हैं। वे आज भी पटना-दानापुर के मुसहरी स्कूल में ही रहती हैं। *(तहलका,* 15 जनवरी, 2012 से साभार)

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 14/01/2012

जीने का असली अर्थ बताती पुस्तकें
पहचान नई दिलाती पुस्तकें
अज्ञान-तिमिर मिटाती पुस्तकें
दुनिया के झंझावातों से पार उतर
ज्ञानामृत पीना सिखाती पुस्तकें।

कौशल्या अग्रवाल, देहरादून, उत्तराखंड

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070